भारत का कोंसलावास, मेलबर्न (आस्ट्रेलिया)

दिनांक **14.9.2014** : हिन्दी दिवस

हिन्दी दिवस के अवसर पर भारत की कँसल जनरल का भाषण

सर्वप्रथम आप सबों को मेरा नमस्कार

हिन्दी दिवस के इस कार्यक्रम में आप सभी महानुभावों का हार्दिक स्वागत है. इस अवसर पर उपस्थित विक्टोरिया भाषा विधालय के प्राचार्य श्रीमान फ्रैंक मरलिनो, रैंजबैक प्राथमिक विधालय के प्राचार्य श्रीमान कोलिन एवरी का विशेष स्वागत और अभिनँदन. उनके अलावा हमारे बीच कई भारतीय भाषाविद, कवि और कथाकार उपस्थित हैं. हमारे बीच हिन्दी भाषा के कई छात्र अपने शिक्षक और अभिभावक के साथ उपस्थित हैं. आप सबों की उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ी है. हम आपकी उपस्थिति के आभारी हैं.

इस अवसर पर हिन्दी विषय पर चर्चा और काव्यपाठ के अलावा विक्टोरिया में हिन्दी की शिक्षा में सहयोग स्वरूप हमारा कोंसलावास कुछ हिन्दी शिक्षण सामग्री विक्टोरिया भाषा विधालय के प्राचार्य श्रीमान फ्रैंक मरलिनो को समर्पित करेगा. यह हिन्दी शिक्षण सामग्री विक्टोरिया भाषा विधालय के अनुरोध पर भारत सरकार के हिन्दी अनुभाग ने उपलब्ध करायी है.

हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है. चीनी भाषा के बाद यह विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है. हिन्दी भारत के अलावा फिजी, मारीशस, गुयाना, सूरीनाम, नेपाल आदि देशों मे बोली जाती है. आज हिन्दी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है.

हिन्दी एक ग्रहणशील सम्पूर्ण समर्थ भाषा है, जिसने भारत को एक सूत्र में पिरोकर रखने का काम किया है. आज भारत में हिन्दी सर्वत्र बोली एवम समझी जाती है. इसके प्रचार प्रसार में हिन्दी फिल्मो का सहज योगदान रहा है. या यों कहें कि हिन्दी फिल्मों के अभिनेता और अभिनेत्रियों की अभिनय अदायगी की लोकप्रियता ने हिन्दी भाषा का चहुमुखी विकास किया है. इसके अलावा हमारे नेताओं ने भी हिन्दी के विकास पर बल दिया है. हमारे प्रधानमँत्री श्री नरेन्द्र मोदी का इस सँदर्भ में विशेष प्रयास है.

चुँकि हिन्दी भारत में सर्वत्र समझी जाती है. भारत में पहले से उपस्थित या अब जगह बना रही बहुराष्ट्रिया कम्पनियों ने अपने माल असबाब के प्रचार प्रसार के लिये सरल एवम सर्वत्र समझे जानी वाली भाषा हिन्दी को प्रचार का माध्यम बनाया है. आज भारत में टी वी एवम मल्टीमेडिया के माध्यमो में हिन्दी का वर्चस्व है जो हमारे लिये खुशी और सन्तोष की बात है. हिन्दी भाषा और इसमे निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर इतनी सुदृढ़ और समृध है कि इस ओर अधिक प्रयत्न न किये जाने पर भी इसकी विकास की गति तेज बनी हुई है. ध्यान, योग, आसन और आयर्वेद विषयों के साथ साथ भारतीय सँगीत, हस्तकला, भोजन और वस्त्रों की बढ़ती लोकप्रियता ने हिन्दी भाषा और शब्दों की विदेशों में विशष पहचान दिलायी है. विदेशों में खुलने वाले योग ध्यान और आयुर्वेद सँस्थानों नें हिन्दी के प्रचार प्रसार को गति दी है. प्रवासी भारतीयों में हजारों लोग हिन्दी के विकास में संलग्न हैं. उनका प्रयास सर्वदा प्रशंसनीय है. उन सभी प्रवासी भारतीयों का उनके इस महती योगदान के लिये हमारा अभिनंदन और आभार.

अब मैं प्राचार्य फ्रैंक मरलिनो से आग्रह करूँगी कि वे मँच पर आयें तथा हिन्दी शिक्षण सामग्री को ग्रहण करें तथा विक्टोरिया में हिन्दी विषय पर दो शब्द कहें.

धन्यवाद.